

कहानी #2

मत्ती 8:1-9:38

पहली कथा में, पर्वत पर उपदेश में, यीशु उन सिद्धांतों का वर्णन करते हैं जिन पर राज्य स्थापित होता है:

- परमेश्वर के सामने सच्ची धार्मिकता।
- परमेश्वर और मनुष्य के साथ सच्चे संबंध।
- उसके वचन के प्रति सच्ची प्रतिक्रिया।

इस प्रवचन के बाद की कथा उस शक्ति का वर्णन है जिस पर यह राज्य स्थापित है और उस शक्ति तक मनुष्यों की पहुँच का तरीका।

मसीह के जीवन में तीन दिन

यूहन्ना 21:25 में प्रेरित कहते हैं कि संसार उन सब बातों को समाहित नहीं कर सकता जो यीशु ने कीं। यह निश्चित रूप से सत्य है जब आप यीशु और उनके जीवन के बारे में लिखी गई कई पुस्तकों और बाइबल से संबंधित सामग्री की जांच करते हैं। (यीशु या बाइबल नाम को गूगल करें और आपको लाखों परिणाम मिलेंगे।)

मत्ती की कथा अध्याय 8-9 में इसका एक अच्छा उदाहरण है कि ऐसा क्यों है। जब हम इन दो अध्यायों में निहित सामग्री के विभिन्न विवरणों की तुलना करते हैं, तो हम देखते हैं कि यहोहन ने इसे क्यों लिखा।

यहाँ यीशु की एक विशेष तीन-दिवसीय अवधि के दौरान की गतिविधि का कालानुक्रमिक सारांश है:

दिन एक:

- पहाड़ पर उपदेश
- पाठ समाप्त करने के बाद कुछ रोगी को चंगा करता है
- कफरनहूम (गृहनगर) जाता है
- रास्ते में सेंटूरियन के दास को चंगा करता है
- पतरस के घर पहुँचता है, पतरस की सास को चंगा करता है, वह उसे भोजन कराती है
- वहाँ लाए गए लोगों के विभिन्न प्रकार के उपचार

दिन दो:

- शिष्यों को गलील सागर पार करने का आदेश देता है
- शिष्यत्व की कीमत के बारे में इच्छुक शिष्यों को सिखाता है
- झील पर तूफान को शांत करता है
- दूसरी ओर पहुंचकर भूत-प्रेत से पीड़ितों को चंगा करता है
- गलील सागर पार करके कफरनहूम लौटता है
- वहाँ लाए गए लकवे के रोगी को चंगा करता है
- मत्ती को बुलाता है

दिन तीन:

- शिष्यों और मत्ती के साथ मत्ती के यहाँ रात का भोजन
- फरिश्तियों और यूहन्ना के शिष्यों को राज्य के स्वभाव के बारे में सिखाते हैं
- अधिकारी की बेटी को पुनर्जीवित करते हैं
- रक्तस्राव वाली स्त्री को चंगा करते हैं
- अंधे व्यक्ति को चंगा करते हैं
- मूक और दानव से पीड़ित व्यक्ति को चंगा करते हैं

मत्ती उन्हें बिल्कुल इसी क्रम में व्यवस्थित नहीं करता, लेकिन शिक्षण उद्देश्यों के लिए अपनी सामग्री को निम्नलिखित तरीके से व्यवस्थित करता है: तीन चमत्कार, एक शिक्षा, तीन चमत्कार, एक और शिक्षा, चार चमत्कार और एक सारांश। दस चमत्कार वर्णित हैं और शिक्षा में विभिन्न विषय हैं, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण विषय शिष्यत्व का है।

मत्ती ने राज्य की प्रकृति का वर्णन किया है (पर्वत पर उपदेश), राज्य की शक्ति (चमत्कार), राज्य में प्रवेश का मार्ग (विश्वास और आज्ञाकारिता), और वह आह्वान जो यीशु सभी को राज्य में प्रवेश करने के लिए करता है (शिष्यत्व)।

कहानी #2

तो हम अध्याय 8 में शुरू करते हैं जहाँ मत्ती पहले चमत्कारों के समूह का वर्णन करते हैं जिसके बाद एक शिक्षा है।

चमत्कार: कुछ रोगी शुद्ध हुआ

¹ यीशु जब पहाड़ से नीचे उतरा तो बहुत बड़ा जन समूह उसके पीछे हो लिया। ² वहीं एक कोढ़ी भी था। वह यीशु के पास आया और उसके सामने झुक कर बोला, “प्रभु, यदि तू चाहे तो मुझे ठीक कर सकता है।”

³ इस पर यीशु ने अपना हाथ बढ़ा कर कोढ़ी को छुआ और कहा, “निश्चय ही मैं चाहता हूँ ठीक हो जा!” और तत्काल कोढ़ी का कोढ़ जाता रहा। ⁴ फिर यीशु ने उससे कहा, “देख इस बारे में किसी से कुछ मत कहना। पर याजक के पास जा कर उसे अपने आप को दिखा। फिर मूसा के आदेश के अनुसार भेंट चढ़ा ताकि लोगों को तेरे ठीक होने की साक्षी मिले।”

- मत्ती 8:1-4

इस व्यक्ति ने अपने विश्वास को प्रदर्शित किया, उसने विश्वास किया कि यीशु उसे चंगा कर सकते हैं और तुरंत चंगा हो गया। यीशु ने उसे “छुआ” (अशुद्ध से शुद्ध)। कुछ रोगी को यह दिखाना था कि वह मन्दिर में पुरोहित को चंगा हो चुका है ताकि उसकी शुद्धि की पुष्टि हो सके और वह फिर से मन्दिर में प्रवेश कर सके और अपना सामाजिक जीवन पुनः आरंभ कर सके।

चमत्कार: सेंटूरियन का दास

⁵ फिर यीशु जब कफरनहूम पहुँचा, एक रोमी सेनानायक उसके पास आया और उससे सहायता के लिये विनती करता हुआ बोला, ⁶ “प्रभु, मेरा एक दास घर में बीमार पड़ा है। उसे लकवा मार दिया है। उसे बहुत पीड़ा हो रही है।”

⁷ तब यीशु ने सेना नायक से कहा, “मैं आकर उसे अच्छा करूँगा।”

⁸ सेना नायक ने उत्तर दिया, “प्रभु मैं इस योग्य नहीं हूँ कि तू मेरे घर में आये। इसलिये केवल आज्ञा दे दे, बस मेरा दास ठीक हो जायेगा। ⁹ यह मैं जानता हूँ क्योंकि मैं भी एक ऐसा व्यक्ति हूँ जो किसी बड़े अधिकारी के नीचे काम करता हूँ और मेरे नीचे भी दूसरे सिपाही हैं। जब मैं एक सिपाही से कहता हूँ ‘जा’ तो वह चला जाता है और दूसरे से कहता हूँ ‘आ’ तो वह आ जाता है। मैं अपने दास से कहता हूँ कि ‘यह कर’ तो वह उसे करता है।”

¹⁰ जब यीशु ने यह सुना तो चकित होते हुए उसने जो लोग उसके पीछे आ रहे थे, उनसे कहा, “मैं तुमसे सत्य कहता हूँ मैंने इतना गहरा विश्वास इस्राएल में भी किसी में नहीं पाया। ¹¹ मैं तुम्हें यह और बताता हूँ कि, बहुत से पूर्व और पश्चिम से आयेंगे और वे भोज में इब्राहीम, इसहाक और याकूब के साथ स्वर्ग के राज्य में अपना-अपना स्थान ग्रहण करेंगे। ¹² किन्तु राज्य की मूलभूत प्रजा बाहर अंधेरे में धकेल दी जायेगी जहाँ वे लोग चीख-पुकार करते हुए दाँत पीसते रहेंगे।”

¹³ तब यीशु ने उस सेनानायक से कहा, “जा वैसा ही तेरे लिए हो, जैसा तेरा विश्वास है।” और तत्काल उस सेनानायक का दास अच्छा हो गया।

- मत्ती 8:5-13

यह सैनिक एक धार्मिक परिवर्तित था (उसने लोगों के लिए एक सभागृह बनाया था, लूका)। उसने यीशु को प्रभु कहा, अपने विश्वास को प्रदर्शित किया और यीशु के वचन पर विश्वास करने को तैयार था। यीशु उसके विश्वास की गुणवत्ता पर आश्चर्य करते हैं (कल्पना करें कि यीशु को प्रभावित करना!)। उसका सेवक यीशु के वचन से ठीक हो जाता है, न कि व्यक्तिगत इच्छा या विश्वास से।

चमत्कार: पतरस की सास और सामान्य उपचार

¹⁴ यीशु जब पतरस के घर पहुँचा उसने पतरस की सास को बुखार से पीड़ित बिस्तर में लेटे देखा। ¹⁵ सो यीशु ने उसे अपने हाथ से छुआ और उसका बुखार उतर गया। फिर वह उठी और यीशु की सेवा करने लगी।

¹⁶ जब साँझ हुई, तो लोग उसके पास बहुत से ऐसे लोगों को लेकर आये जिनमें दुष्टात्माएँ थीं। अपनी एक ही आज्ञा से उसने दुष्टात्माओं को निकाल दिया। इस तरह उसने सभी रोगियों को चंगा कर दिया। ¹⁷ यह इसलिये हुआ ताकि परमेश्वर ने भविष्यवक्ता यशायाह द्वारा जो कुछ कहा था, पूरा हो: “उसने हमारे रोगों को ले लिया और हमारे संतापों को ओढ़ लिया।”

- मत्ती 8:14-17

ध्यान दें कि पतरस की सास को तुरंत और पूरी तरह से ठीक किया गया था। कई लोग शारीरिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक रोगों के साथ यीशु के पास लाए गए, और प्रभु ने उन्हें सभी को ठीक किया। मत्ती दिखाते हैं कि यीशु की यह चमत्कारी चिकित्सा शक्ति मसीह के संबंध में भविष्यवाणी के अनुरूप थी।

शिक्षा: संभावित शिष्यों के लिए निर्देश

¹⁸ यीशु ने जब अपने चारों ओर भीड़ देखी तो उसने अपने अनुयायियों को आज्ञा दी कि वे झील के परले किनारे चले जायें। ¹⁹ तब एक यहूदी धर्मशास्त्री उसके पास आया और बोला, “गुरु, जहाँ कहीं तू जायेगा, मैं तेरे पीछे चलूँगा।”

²⁰ इस पर यीशु ने उससे कहा, “लोमड़ियों की खोह और आकाश के पक्षियों के घोंसले होते हैं किन्तु मनुष्य के पुत्र के पास सिर टिकाने को भी कोई स्थान नहीं है।”

- मत्ती 8:18-20

यीशु राज्य के "पारलौकिक" अनुभव का वर्णन करने की कोशिश कर रहे हैं। जो लोग राज्य में हैं वे संसार में हैं लेकिन उसमें भाग लेने में कठिनाई होती है। वे कभी वास्तव में घर जैसा महसूस नहीं करते। वे वास्तव में केवल तीर्थयात्री हैं जो गुजर रहे हैं।

एक यहूदी लेखक के लिए जिसकी धर्म इतनी गहराई से इतिहास, संस्कृति और भूगोल से जुड़ी थी, मसीह के साथ पहचान बनाना कठिन होगा बजाय एक भौतिक धर्म के जो इतिहास पर आधारित हो। यीशु के शिष्य यहाँ अपना घर बनाते हैं, लेकिन वे तब तक घर पर नहीं होते जब तक वे मसीह के साथ न हों।

शिक्षा: मृत मृतकों को दफनाएंगे

²¹ और उसके एक शिष्य ने उससे कहा, “प्रभु, पहले मुझे जाकर अपने पिता को गाड़ने की अनुमति दे।”

²² किन्तु यीशु ने उससे कहा, “मेरे पीछे चला आ और मरे हुओं को अपने मुर्दे आप गाड़ने दे।”

- मत्ती 8:21-22

यीशु अपने अनुयायियों से कहते हैं कि वे इस संसार की बातों की चिंता आध्यात्मिक रूप से मृत लोगों को छोड़ दें, इन बातों को मसीह का अनुसरण करने से आपको रोकने न दें।

अब मत्ती एक और चमत्कारों के समूह का वर्णन करता है।

चमत्कार: तूफान को शांत करना

²³ तब यीशु एक नाव पर जा बैठा। उसके अनुयायी भी उसके साथ थे। ²⁴ उसी समय झील में इतना भयंकर तूफान उठा कि नाव लहरों से दबी जा रही थी। किन्तु यीशु सो रहा था। ²⁵ तब उसके अनुयायी उसके पास पहुँचे और उसे जगाकर बोले, “प्रभु हमारी रक्षा कर। हम मरने को हैं!”

²⁶ तब यीशु ने उनसे कहा, “अरे अल्प विश्वासियों! तुम इतने डरे हुए क्यों हो?” तब उसने खड़े होकर तूफान और झील को डाँटा और चारों तरफ़ शांति छा गयी।

²⁷ लोग चकित थे। उन्होंने कहा, “यह कैसा व्यक्ति है? आँधी तूफान और सागर तक इसकी बात मानते हैं!”

- मत्ती 8:23-27

प्रेरितों ने तूफान से बचाने के लिए डर के साथ यीशु से प्रार्थना की। उनकी आस्था "थोड़ी" थी, आस्था की अनुपस्थिति नहीं। उनके विश्वास की कमजोरी डर में प्रकट हुई। यीशु ने प्रकृति पर अपनी शक्ति प्रदर्शित की। किसी भी आधुनिक विश्वास चिकित्सक ने ऐसा कभी प्रदर्शित नहीं किया।

चमत्कार: बुरे आत्माओं को निकालना

²⁸ जब यीशु झील के उस पार, गदरेनियों के देश पहुँचा, तो उसे कब्रों से निकल कर आते दो व्यक्ति मिले, जिनमें दुष्टात्माएँ थीं। वे इतने भयानक थे कि उस राह से कोई निकल तक नहीं सकता था। ²⁹ वे चिल्लाये, “हे परमेश्वर के पुत्र, तू हमसे क्या चाहता है? क्या तू यहाँ निश्चित समय से पहले ही हमें दंड देने आया है?”

³⁰ वहाँ कुछ ही दूरी पर बहुत से सुअरों का एक रेवड़ चर रहा था। ³¹ सो उन दुष्टात्माओं ने उससे विनती करते हुए कहा, “यदि तुझे हमें बाहर निकालना ही है, तो हमें सुअरों के उस झुंड में भेज दे।”

³² सो यीशु ने उनसे कहा, “चले जाओ।” तब वे उन व्यक्तियों में से बाहर निकल आए और सुअरों में जा घुसे। फिर वह समूचा रेवड़ ढलान से लुढ़कते, पुढ़कते दौड़ता हुआ झील में जा गिरा। सभी सुअर पानी में डूब कर मर गये। ³³ सुअर के रेवड़ों के रखवाले तब वहाँ से दौड़ते हुए नगर में आये और सुअरों के साथ तथा दुष्ट आत्माओं से ग्रस्त उन व्यक्तियों के साथ जो कुछ हुआ था, कह सुनाया। ³⁴ फिर तो नगर के सभी लोग यीशु से मिलने बाहर निकल पड़े। जब उन्होंने यीशु को देखा तो उससे विनती की कि वह उनके यहाँ से कहीं और चला जाये।

- मत्ती 8:28-34

इस दृश्य में भूत-प्रेत से ग्रस्त व्यक्ति बहुत खतरनाक था और कई भूतों से ग्रस्त था। भूत डरते थे कि उनका न्याय निकट है (वे अपने न्याय के परिणाम जानते हैं लेकिन समय नहीं। कोई भी समय नहीं जानता, और यदि आत्माएँ नहीं जानतीं तो निश्चित रूप से मनुष्य भी नहीं जानते)। ध्यान दें कि यीशु उन्हें एक सरल शब्द से निकाल देते हैं, बिना किसी नाटक के।

चमत्कार: लकवे का रोगी ठीक हुआ

¹ फिर यीशु एक नाव पर जा चढ़ा और झील के पार अपने नगर आ गया। ² लोग लकवे के एक रोगी को खाट पर लिटा कर उसके पास लाये। यीशु ने जब उनके विश्वास को देखा तो उसने लकवे के रोगी से कहा, “हिम्मत रख हे बालक, तेरे पाप को क्षमा किया गया!”

³ तभी कुछ यहूदी धर्मशास्त्री आपस में कहने लगे, “यह व्यक्ति (यीशु) अपने शब्दों से परमेश्वर का अपमान करता है।”

⁴ यीशु, क्योंकि जानता था कि वे क्या सोच रहे हैं, उनसे बोला, “तुम अपने मन में बुरे विचार क्यों आने देते हो? ⁵⁶ अधिक सहज क्या है? यह कहना कि ‘तेरे पाप क्षमा हुए’ या यह कहना ‘खड़ा हो और चल पड़?’ ताकि तुम यह जान सको कि पृथ्वी पर पापों को क्षमा करने की शक्ति मनुष्य के पुत्र में हैं।” यीशु ने लकवे के मारे से कहा, “खड़ा हो, अपना बिस्तर उठा और घर चला जा।”

⁷ वह लकवे का रोगी खड़ा हो कर अपने घर चला गया। ⁸ जब भीड़ में लोगों ने यह देखा तो वे श्रद्धामय विस्मय से भर उठे और परमेश्वर की स्तुति करने लगे जिसने मनुष्य को ऐसी शक्ति दी।

| - मत्ती 9:1-8

पहले, यीशु उसके पापों को क्षमा करते हैं। धर्मशास्त्री बड़बड़ाए क्योंकि उन्हें लगा कि यीशु के पास ऐसा करने का कोई अधिकार या शक्ति नहीं है, केवल परमेश्वर पाप क्षमा करता है। उन्होंने उसे निन्दा का आरोप लगाया। यीशु अपनी शक्ति और अधिकार को उस व्यक्ति की बीमारी को ठीक करके प्रदर्शित करते हैं (एक पर शक्ति दूसरे पर शक्ति का प्रदर्शन है)। जो लोग इसे देखते हैं वे परमेश्वर की महिमा करते हैं (चमत्कारों के उद्देश्यों में से एक)।

शिक्षा: मत्ती को बुलाया गया है

यीशु जब वहाँ से जा रहा था तो उसने चुंगी की चौकी पर बैठे एक व्यक्ति को देखा। उसका नाम मत्ती था। यीशु ने उससे कहा, “मेरे पीछे चला आ।” इस पर मत्ती खड़ा हुआ और उसके पीछे हो लिया।

| - मत्ती 9:9

ध्यान दें कि मैथ्यू अपने बुलावे और प्रतिक्रिया के बारे में कितनी सरलता से लिखते हैं। वह अपना नाम, अपना पूर्व जीवन (कर संग्रहकर्ता), अपना बुलावा और प्रतिक्रिया देते हैं। वह अपने लिए तीसरे व्यक्ति का उपयोग करते हैं और यीशु से अपने लिए कोई संवाद दर्ज नहीं करते। यह उनकी महान विनम्रता को दर्शाता है।

शिक्षा: पापियों के साथ खाने के आरोप

¹⁰ ऐसा हुआ कि जब यीशु मत्ती के घर बहुत से चुंगी वसूलने वालों और पापियों के साथ अपने अनुयायियों समेत भोजन कर रहा था ¹¹ तो उसे फरीसियों ने देखा। वे यीशु के अनुयायियों से पूछने लगे, “तुम्हारा गुरु चुंगी वसूलने वालों और दुष्टों के साथ खाना क्यों खा रहा है?”

¹² यह सुनकर यीशु उनसे बोला, “स्वस्थ लोगों को नहीं बल्कि रोगियों को एक चिकित्सक की आवश्यकता होती है। ¹³ इसलिये तुम लोग जाओ और समझो कि शास्त्र के इस वचन का अर्थ क्या है, ‘मैं बलिदान नहीं चाहता बल्कि दया चाहता हूँ।’ मैं धर्मियों को नहीं, बल्कि पापियों को बुलाने आया हूँ।”

| - मत्ती 9:10-13

यीशु की इस हमले के प्रति प्रतिक्रिया यह थी कि उनका मंत्रालय अनुष्ठान नहीं, बल्कि करुणा का था। चंगाई के चमत्कार और क्रूस की सेवा करुणा से प्रेरित थे। दूसरों के प्रति प्रेम से उत्पन्न आत्मा की रक्षा और सेवा से अधिक परमेश्वर की महिमा कोई नहीं करता।

शिक्षा: यूहन्ना के शिष्य

¹⁴ फिर बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना के शिष्य यीशु के पास गये और उससे पूछा, “हम और फ़रीसी बार-बार उपवास क्यों करते हैं और तेरे अनुयायी क्यों नहीं करते?”

¹⁵ फिर यीशु ने उन्हें बताया, “क्या दूल्हे के साथी, जब तक दूल्हा उनके साथ है, शोक मना सकते हैं? किन्तु वे दिन आयेंगे जब दूल्हा उन से छीन लिया जायेगा। फिर उस समय वे दुःखी होंगे और उपवास करेंगे।

¹⁶ “बिना सिकुड़े नये कपड़े का पैबंद पुरानी पोशाक पर कोई नहीं लगाता क्योंकि यह पैबंद पोशाक को और अधिक फाड़ देगा और कपड़े की खींच और बढ़ जायेगी। ¹⁷ नया दाखरस पुरानी मशकों में नहीं भरा जाता नहीं तो मशकें फट जाती हैं और दाखरस बहकर बिखर जाता है। और मशकें भी नष्ट हो जाती हैं। इसलिये लोग नया दाखरस, नयी मशकों में भरते हैं जिससे दाखरस और मशक दोनों ही सुरक्षित रहते हैं।”

- मत्ती 9:14-17

प्रश्न उठे कि क्यों यूहन्ना के शिष्य और फरीसियों के शिष्य उपवास करते थे और यीशु के शिष्य नहीं करते थे। फरीसी नियमित रूप से अपने धार्मिक अभ्यास के हिस्से के रूप में उपवास करते थे (जिसमें से अधिकांश दिखावा था)। यूहन्ना और उसके शिष्य आंशिक रूप से फरीसियों द्वारा उनकी यहूदी परवरिश के कारण उपवास करते थे, और आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि उनके नेता, यूहन्ना, एक तपस्वी थे (कोई शराब नहीं, केवल शहद और टिड्डे खाते थे)। इसके अलावा, जब यूहन्ना जेल में थे, तो वे उनकी रिहाई के लिए प्रार्थना और उपवास करते थे।

यीशु तीन उदाहरणों के साथ उत्तर देते हैं:

यीशु की उपस्थिति आनंद की है, राज्य का राजा आ चुका है और जैसे दूल्हे की उपस्थिति शादी में होती है, यह उत्सव का समय है, उपवास का नहीं। जब वह मारे जाएंगे (उनके क्रूस की भविष्यवाणी) तब उपवास करने का कारण होगा।

पैच और मटके का चमड़ा

जैसा कि मैंने कहा, फरीसियों के शिष्यों के उपवास करने का कारण यह था कि यह उनके नेताओं और परंपरा द्वारा उन पर थोप दिया गया था। यूहन्ना के शिष्य उपवास करते थे क्योंकि यूहन्ना के उदाहरण के कारण और इस तथ्य के कारण कि वह इस समय कैद में था। यीशु ने अपने शिष्यों पर यह शर्त नहीं लगाई, और चूंकि वह उनके साथ था, वे उसकी उपस्थिति में आनंदित थे और उन्हें उपवास करने की आवश्यकता नहीं थी।

पैच और वाइनस्किन के बारे में पद उनके आध्यात्मिक स्थिति का उल्लेख करते हैं। वह उन्हें (जैसे उसने अपने शिष्यों के लिए किया था जो नया वस्त्र, नया वाइनस्किन थे) अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के विवरण प्रकट नहीं

करता क्योंकि वे विश्वास नहीं करते थे। वह नया पैच था और वे, अपनी अविश्वास में, पुराने कपड़े थे। वह नई शराब था और वे, अपनी अविश्वास में, पुराने वाइनस्किन थे। उनका अविश्वास उन्हें नष्ट कर देगा।

चमत्कार: अधिकारी की बेटी

¹⁸ यीशु उन लोगों को जब ये बातें बता ही रहा था, तभी यहूदी आराधनालय का एक मुखिया उसके पास आया और उसके सामने झुक कर विनती करते हुए बोला, “अभी-अभी मेरी बेटी मर गयी है। तू चल कर यदि उस पर अपना हाथ रख दे तो वह फिर से जी उठेगी।”

¹⁹ इस पर यीशु खड़ा हो कर अपने शिष्यों समेत उसके साथ चल दिया।

²³ उधर यीशु जब यहूदी धर्म-सभा के मुखिया के घर पहुँचा तो उसने देखा कि शोक धुन बजाते हुए बाँसुरी वादक और वहाँ इकट्ठे हुए लोग लड़की की मृत्यु पर शोक कर रहे हैं। ²⁴ तब यीशु ने लोगों से कहा, “यहाँ से बाहर जाओ। लड़की मरी नहीं है, वह तो सो रही है।” इस पर लोग उसकी हँसी उड़ाने लगे। ²⁵ फिर जब भीड़ के लोगों को बाहर भेज दिया गया तो यीशु ने लड़की के कमरे में जा कर उसका हाथ पकड़ा और वह उठ बैठी। ²⁶ इसका समाचार उस सारे क्षेत्र में फैल गया।

- मत्ती 9:18-19; 23-26

एक सभागृह के बुजुर्ग यीशु से अपनी मरती हुई बेटी को बचाने के लिए कहते हैं। यीशु तब पहुंचते हैं जब बच्ची मर चुकी होती है। फिर वह उसे मृतकों में से जीवित कर देते हैं। यह चमत्कार उनके अपने पुनरुत्थान का पूर्वाभास है।

चमत्कार: रक्तसाव वाली महिला

²⁰ वहीं एक ऐसी स्त्री थी जिसे बारह साल से बहुत अधिक रक्त बह रहा था। वह पीछे से यीशु के निकट आयी और उसके वस्त्र की कन्नी छू ली। ²¹ वह मन में सोच रही थी, “यदि मैं तनिक भी इसका वस्त्र छू पाऊँ, तो ठीक हो जाऊँगी।”

²² मुड़कर उसे देखते हुए यीशु ने कहा, “बेटी, हिम्मत रख। तेरे विश्वास ने तुझे अच्छा कर दिया है।” और वह स्त्री तुरंत उसी क्षण ठीक हो गयी।

- मत्ती 9:20-22

यह चमत्कार अधिकारी की विनती और यीशु के उस व्यक्ति के घर पहुंचने के बीच किया गया है ताकि उसकी बेटी को जीवित किया जा सके। इस घटना का विस्तार से वर्णन मार्क 5:21-34 और लूका 8:43-48 में किया गया है। मत्ती इस घटना को उसके क्रम में प्रस्तुत करता है, जिसमें यह विनती सभागृह अधिकारी की ओर से पहले और बाद में होती है।

यह ध्यान देने योग्य है कि यीशु ने उस महिला को उसकी विश्वास के आधार पर चंगा किया, और मृत बच्चे को उसके पिता के विश्वास के उत्तर में जीवित किया। यह हमें केवल अपने लिए ही नहीं बल्कि दूसरों के लिए भी

प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित करता है, क्योंकि परमेश्वर सभी विश्वास से की गई प्रार्थनाओं का उत्तर देता है।

चमत्कार: बहरा और दानव से पीड़ित आदमी ठीक हुआ

²⁷ यीशु जब वहाँ से जाने लगा तो दो अन्धे व्यक्ति उसके पीछे हो लिये। वे पुकार रहे थे, “हे दाऊद के पुत्र, हम पर दया कर।”

²⁸ यीशु जब घर के भीतर पहुँचा तो वे अन्धे उसके पास आये। तब यीशु ने उनसे कहा, “क्या तुम्हें विश्वास है कि मैं, तुम्हें फिर से आँखें दे सकता हूँ?” उन्होंने उत्तर दिया, “हाँ प्रभु!”

²⁹ इस पर यीशु ने उन की आँखों को छूते हुए कहा, “तुम्हारे लिए वैसा ही हो जैसा तुम्हारा विश्वास है।” ³⁰ और अंधों को दृष्टि मिल गयी। फिर यीशु ने उन्हें चेतावनी देते हुए कहा, “इसके विषय में किसी को पता नहीं चलना चाहिये।” ³¹ किन्तु उन्होंने वहाँ से जाकर इस समाचार को उस क्षेत्र में चारों ओर फैला दिया।

³² जब वे दोनों वहाँ से जा रहे थे तो कुछ लोग यीशु के पास एक गूँगे को लेकर आये। गूँगे में दुष्ट आत्मा समाई हुई थी और इसीलिए वह कुछ बोल नहीं पाता था। ³³ जब दुष्ट आत्मा को निकाल दिया गया तो वह गूँगा, जो पहले कुछ भी नहीं बोल सकता था, बोलने लगा। तब भीड़ के लोगों ने अचरज से भर कर कहा, “इस्राएल में ऐसी बात पहले कभी नहीं देखी गयी।”

³⁴ किन्तु फ़रीसी कह रहे थे, “वह दुष्टात्माओं को शैतान की सहायता से बाहर निकालता है।”

- मत्ती 9:27-34

जब इसे अन्य चमत्कारों (मृतकों को जीवित करना, समुद्र को शांत करना, आदि) के साथ देखा जाए तो इस चमत्कार का महत्व यह था कि उनके इतिहास में किसी अन्य नबी या चमत्कार करने वाले ने इस प्रकार सृष्टि, आत्मा की दुनिया, रोगों और मृत्यु पर एकल रूप से प्रभुत्व नहीं दिखाया था जैसा यीशु ने किया था। इस प्रकार की शक्ति केवल परमेश्वर द्वारा ही प्रकट की जा सकती थी!

सारांश: यीशु, फसलों के प्रभु

³⁵ यीशु यहूदी आराधनालयों में उपदेश देता, परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार का प्रचार करता, लोगों के रोगों और हर प्रकार के संतापों को दूर करता उस सारे क्षेत्र में गाँव-गाँव और नगर-नगर घूमता रहा था। ³⁶ यीशु जब किसी भीड़ को देखता तो उसके प्रति करुणा से भर जाता था क्योंकि वे लोग वैसे ही सताये हुए और असहाय थे, जैसे वे भेड़ें होती हैं जिनका कोई चरवाहा नहीं होता। ³⁷ तब यीशु ने अपने अनुयायियों से कहा, “तैयार खेत तो बहुत हैं किन्तु मज़दूर कम हैं।” ³⁸ इसलिए फसल के प्रभु से प्रार्थना करो कि, वह अपनी फसल को काटने के लिये मज़दूर भेजे।”

- मत्ती 9:35-38

मत्ती यीशु की निरंतर सेवा की प्रकृति का सारांश प्रस्तुत करता है: शिक्षा देना, प्रचार करना और चंगा करना।

यीशु की शिक्षा और शिष्यत्व के लिए आह्वान के बाद एक प्रार्थना होती है जिसमें उत्तर की मांग की जाती है। अगले भाग में हम शिष्यों के चयन और उन्हें भेजने को देखेंगे ताकि वे प्रभु द्वारा की गई शिक्षा, प्रचार और चमत्कारों को बढ़ा सकें।

तो हमारे पास, मत्ती की दृष्टि और कलम के माध्यम से, राजा के दैनिक जीवन का एक वर्णन है क्योंकि वह अपने चमत्कारिक शक्ति और प्रेरित शिक्षाओं के माध्यम से पुरुषों और महिलाओं के हृदयों में अपने राज्य की स्थापना करता है।